MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal

Oct. To Dec. 2022
Issue-44, Vol-03

दुखी हो चुके होते है कि उनकी बात मान जाते हैं। भुधर अनेक स्त्रियों का इसी प्रकार क्रय कर कहीं दूर जाकर बेच आता है। पता नहीं वह उनसे वेश्यावृत्ति कराता है। ऋण से मुक्ति पाने के लिए स्त्री को पशु की तरह बेच दिया जाता है।

निष्कर्ष –

राम के समय राक्षसों द्वारा रुपयों की हत्या, सुंदर स्त्रियों का अपहरण और उन्हें बंदी बनाना राक्षसों एवं आर्यों द्वारा सामान्य प्रजा का शोषण, तत्युगिन समाज के विभिन्न प्रथाएं, रीति रिवाज और अंधश्रद्धाएं पाटपन, अन्याय जैसी समस्याएं स्वतंत्र भारत की अनेक अनेक समस्याओं में एक आकार होती दिखाई देती है। भारत विभाजन के समय पाकिस्तानियों द्वारा की गई बुद्धिजीवियों की सामूहिक हत्याएं, स्त्रियों पर किए गए बलात्कार तथा स्वतंत्र उत्तर भारत में नेताओं और बदमाशों द्वारा आम जनता का शोषण, उनके द्वारा होते अत्याचार छल–कपट, पाखंड अन्याय और विभिन्न जातिगत समाजों में व्याप्त सड़ी गली मान्यताओं, रीति–रिवाजों को कोहली जिन्हें पौराणिक मिथकों द्वारा सुंदर अभिव्यक्ति प्रदान की है। महाभारत युगीन समाज की विभिन्न समस्याओं में वर्तमान भारत की अनेकानेक समस्याओं और विसंगतियों का एकरूप कर अभिव्यक्त करने में सफल सिद्ध हुए हैं।

संदर्भ –

१) मनुस्मृति पृष्ठ – २२७
२) महाभारत – आदि पर्व पृष्ठ – ४६,१–१३
३) अभ्युदय भाग–१, दीक्षा, नरेंद्र कोहली पृष्ठ – २४
४) वही पृष्ठ – १६१
५) वही पृष्ठ – १०
६) वही पृष्ठ – ७
७) अभ्युदय भाग – १ 'संघर्ष की ओर' नरेंद्र कोहली पृष्ठ – ४९१

⌘⌘⌘⌘

28

संवेदना एवं शिल्प की दृष्टि से प्रेमचन्द की कहानियाँ

प्रो॰ ललिता कुमारी
विभाग हिन्दी,
कर्णपुरा महाविद्यालय, बड़कागांव, हजारीबाग

प्रस्तावना:–

साहित्य मानव जीवन की अनेक परतों को खोलता है। मनुष्य बेहतर होता जा रहा है। उसके कार्य अचंभित करते हैं। उसकी दृष्टि अधिक व्यापक और भेदक हो गयी है। कहने, सुनने, लिखने और पढ़ने का स्वरूप बदल गया है। फलत: मानव जीवन परिवर्तन का प्रतिमान बन गया है। इसी प्रकार कहानी कला के स्वरूप में भी बदलाव आया है और वह चन्द्रकला की भाँति पलकिन नये रूपाकार को ग्रहण कर सूर्य रूपी मानव–जीवन में प्रकाश उधार लेकर साहित्याकाश को रोशन कर रही है। आज की कहानी समय और समाज के लिए प्रतिबद्ध दिखाई देती है। इसमें अनुभूति की सच्चाई पूरी ईमानदारी से प्रतिबिम्बित होती है। ऐसी ही कहानियों के साथ कहानीकार प्रेमचन्द का पदार्पण होता है। प्रेमचन्द अपने समय के समाज से गहरे जुड़े हुए रचनाकार हैं। इनकी कहानियाँ हिन्दी कहानी की परम्परा में छायावादी धारा को समृद्ध करती है। फनिश्वर नाथ रेणु, निराला जी, महादेवी वर्मा जैसे कहानिकारों की तरह हिन्दी कहानी में कड़ी के रूप में प्रेमचन्द देखे जाते हैं।

छायावादी हिन्दी कहानी जिन उज्जायल पथों के साथ सुशोभित थी। उसकी गहरी झलक प्रेमचन्द की कहानियों में दिखाई पड़ती है। ये समकालीन कहानीकारों के साथ अपनी विशिष्ट पहचान से अलग देखे जा सकते हैं। जिस प्रकार संवेदना और शिल्प की नयी भूमि की तलाश प्रेमचन्द ने गढ़ी है, वह आज भी

12/10/22
Principal
Karnpura College
Barkagaon, Hazaribag

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त नहीं हो रही है। अतः इस योजना को और बेहतर करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

बच्चों के लिए शिक्षा योजना में नगद एवं आर्थिक रूप से विभिन्न स्तरों को विशेष दिये जाने हेतु उन्हें एक ओर मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था की कराई गयी वहीं दूसरी ओर उनके लिए दोपहर के भोजन का भी सामाजिक स्तर पर व्यवस्था उपलब्ध है। इस योजना के प्रारम्भ होने के बाद से देखा जाय तो बहुत से ऐसे परिवार जो गरीबी की रेखा से नीचे अपने बच्चों को दोपहर के भोजन का प्रबंध नहीं करा पाते हैं। जिससे अनेक बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास में बाधाओं का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इन स्वाभाविक बाधाओं का समुचित समाधान करने के उद्देश्य से मध्याह्न भोजन योजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इससे छात्र–छात्राओं का सर्वांगीण विकास हो रहा है। वे नियमित रूप से विद्यालय आते हैं, उनका स्वास्थ्य भी बेहतर है। परन्तु गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव देखा जाता है। कारण छात्र–छात्राओं का ध्यान भी सिर्फ भोजन पर रहता है। छात्र–छात्राएं भोजन के बाद विद्यालय से चले जाते हैं। शिक्षक भी मध्याह्न भोजन के व्यवस्था में लगे रहते हैं। इसलिए वे शिक्षण पर मनोयोग से ध्यान नहीं दे पाते जिसके कारण बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिल पाता है। अतः इस ओर सभी को ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ :

१. योजना, नवम्बर (२०१२), अंक ११, पृ. सं. ३१

२. पाण्डेय, मुनीन्द्र कुमार (२०१४), उच्च प्राथमिक शिक्षा के सामान्य और शैक्षिक उपलब्धि बच्चों में मध्याह्न भोजन योजना के प्रभाव का जौनपुर जनपद में समीक्षात्मक अध्ययन, शोध प्रबंध, शिक्षा विभाग, जगदीश प्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान, पृ.सं. ५०–८१

३. शर्मा, विपुल कुमार (२०१५), मध्याह्न भोजन योजना एवं स्वास्थ्य संवर्धन, ... प्रकाशन, वाराणसी, पृ.सं. ३१–४७

26

आजादी के बाद खेतिहर आन्दोलन

प्रो० सुरेश महतो
विभाग इतिहास,
कर्णपुरा महाविद्यालय, बड़कागांव, हजारीबाग

स्वतंत्रता पूर्व किसान आंदोलन

भारतीय संस्कृति में पर्व–त्योहार, रीति–रिवाज, नाचगान, कर्मकांड आदि कृषि से जुड़े हुए हैं। खेती ही भारत के आत्मनिर्भर होने का मूल आधार थी किन्तु अंग्रेजों ने भारत की अर्थव्यवस्था को नष्ट करने के लिए भूमि व्यवस्था को बदलकर जमींदारी प्रथा आरंभ की। इससे वास्तविक किसान निरंतर गरीब होते गए। खेती पर देश की आत्मनिर्भरता नष्ट होती गई। भारत में किसान आंदोलन का लगभग २०० वर्षों का इतिहास है। १९वीं शताब्दी में बंगाल का संथाल एवं नील विद्रोह तथा महाराष्ट्र एवं पंजाब में किसान आंदोलन इसके उदाहरण हैं। भारतीय किसान आंदोलन की राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही। किसान आंदोलन और राष्ट्रीय आंदोलन का अटूट रिश्ता था। अप्रैल, १९१७ में नील कृषकों द्वारा बिहार के चम्पारण जिले में गांधी जी के नेतृत्व में चलाया गया किसान संघर्ष देश का राजनीतिक दृष्टि से पहला सफल आंदोलन था। अंग्रेजी सरकार ने किसानों के मांगों को दंगे और न्याय तथा कानून से सम्बंधित प्रशासनिक समस्या के रूप में देखा था। किसान आंदोलन वहीं उभरे जहां राष्ट्रीय आंदोलन की नींव पड़ चुकी थी। उदाहरण के लिए केरल, पंजाब, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार।

वर्ष १९०८ में 'हिंद स्वराज' में गांधी जी ने किसानों को आत्मबल युक्त समुदाय के रूप में देखा था और उन्हें सत्याग्रह का परम्परागत प्रयोगकर्ता बताया था। उनके अनुसार हिंदुस्तान का अर्थ मुट्ठीभर राजागण

12/10/2022
Principal
Karnpura College
Barkagaon, Hazaribag

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal

Oct. To Dec. 2022
Issue-44, Vol-03

19

महिलाओं के आर्थिक विकास में सूक्ष्म वित्तीय संस्थानों की भूमिका (हजारीबाग जिले के बड़कागाँव प्रखण्ड के विशेष संदर्भ में)

सनवीर कुमार
शोध छात्र, वाणिज्य विभाग,
राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़

भूमिका :—

आर्थिक का अर्थ समान्तया धन या रूपया से जुड़ा हुआ है। आर्थिक क्रिया हम वैसे क्रिया को कहते है, जिसका उद्देश्य प्रत्यक्ष रूप से रूपया का अर्जन करना होता है। आज के समय में ९० प्रतिशत कार्य आर्थिक ही हो रहा है, मात्र १० प्रतिशत कार्य ही ऐसे है जिसका उद्देश्य अनार्थिक है।

भारत जैसे विशाल देश में लोगों की आर्थिक स्थिति ठिक नहीं है, अन्य विकसित या विकासशील देशों की अपेक्षा हमारे देश की प्रति व्यक्ति आय निम्न है। इस निम्न आय को बढ़ाने के लिए देश में अनेक स्तर से प्रयास किये जा रहे। कुल जनसंख्या का ५० प्रतिशत आबादी महिलाओं की है, जिसकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब है, तो देश को विकास की ओर कैसे ले जाया जा सकता है। ऐसी स्थिति में अन्य सभी विकास के उपाय या समाधान में से सूक्ष्म वित्तीय संस्थानें भी अपना अहम भूमिका निभा रहा है। रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया और केन्द्र या राज्य सरकार के काफी दबाव के बाद भी बड़े पैमाने के सरकारी और निजी बैंक सभी लोगों के पहुँच से कोसो दूर है। बड़े पैमाने के बैंक या वित्तीय संस्थान केवल बड़े व्यवसायी या सरकारी सेवक को ही मदद करने या कर्ज देने में अपनी रूचि दिखाते है। ऐसी स्थिति में बड़े वित्तीय संस्थान केवल १० से २० प्रतिशत लोगों को ही आर्थिक मदद कर पा रही है।

विषय परिचय:— सूक्ष्म एवं लघु वित्तीय संस्थान आज के समय में घर—घर तक अपनी पहुँच बना चुका है। खास कर महिलाओं को अपनी ओर आकर्षित किया है, और ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक उत्थान में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। कुल महिला आबादी का ४० से ५० प्रतिशत तक के महिलाओं को सूक्ष्म वित्तीय संस्थाओं द्वारा आर्थिक मदद मिल रहा है। गाँव में छोटे—छोटे समूह बनाकर, समूह का पंजीयन कराकर छोटे—छोटे राशि को सदस्यों द्वारा एकत्रित कर अपने दैनिक आवश्यकताओं के अलावा अपने अन्य वित्तीय समस्याओं का समाधान निकाल रही है। उन्हें बड़े—बड़े बैंक या बड़ेवित्तीय संस्थानों का चक्कर लगाना नहीं पड़ रहा है। छोटे वित्तीय संस्थानों में खुद समूह के ही लोग अपने सुविधा अनुसार नियम को बनाते है, जिससे अपना क्रिया कलाप को करने के बाद बचे समय में ऐसे संस्थाओं का संचालन करती है।

झारखण्ड ऐसे पिछड़े राज्य में महिलाओं की आर्थिक स्थिति और भी गंभीर है। पंजाब, हरियाणा या विकसित राज्य की अपेक्षा झारखण्ड में महिलाओं की आर्थिक स्थिति काफी ही निम्ननीय है। ऐसे समस्याओं का समाधान में हजारीबाग के बड़कागाँव प्रखण्ड में सूक्ष्म वित्तीय संस्थान, गैर सरकारी संस्थान (एन०जी०ओ०), सहायता समूह और सरकार के द्वारा कुछ योजनाओं के माध्यम से महिलाओं का आर्थिक और सामाजिक विकास किया जा रहा है। महिलाएं सूक्ष्म वित्तीय संस्थानों से कर्ज या सहायता लेकर खुद उद्यमी बन रही है, और लोगों को रोजगार देने का भी कार्य कर रही है।

परिभाषा :— सूक्ष्म वित्तीय स[illegible] निम्न वर्ग के लोगों को अपना [illegible] लिए सस्ती ब्याज दरों पर कर्ज [illegible]

78 / 175

सूक्ष्म वित्तीय योजना एक ऐसी योजना है, जिसके अर्न्तगत छोटे पैमाने पर गरीब, जरूरतमंद लोगों को स्वयं सेवी संस्था के द्वारा कम से कम ब्याज दर पर साख अथवा ऋण की व्यवस्था की जाती है, जिससे ऐसे लोग भी आर्थिक कार्य कर अपना तथा

12/10/2022

Principal
Karnpura College
Barkagaon, Hazaribag

39

बड़कागांव, हजारीबाग के आर्थिक विकास में कृषि का योगदान एक अध्ययन

निरंजन प्रसाद नीरज
वाणिज्य विभागाध्यक्ष,
कर्णपुरा महाविद्यालय, बड़कागांव, हजारीबाग

परिचय

भारत कृषि प्रधान देश है, यहां की जनसंख्या ७०% कृषि पर निर्भर करती है। देश का आर्थिक विकास कृषि के क्षेत्र में अधिक से अधिक सरकार के द्वारा किया जा रहा है, इस प्रकार झारखण्ड राज्य के हजारीबाग जिला के बड़कागांव प्रखण्ड का भी हो रहा है, बड़कागांव का मुख्य कार्य क्षेत्र कृषि है जो सरकार के माध्यम से विकास कर रहा है, जैसे कूप निर्माण, बोरिंग, तालाब, चेक डेम, नदी, नाले, इत्यादि। बड़कागांव के कृषि क्षेत्र को हम और भी अधिक निम्न बिंदु के द्वारा समझ सकते है—

(a) कृषि विकास के निर्धारक तत्व— बड़कागांव प्रखण्ड में आधारभूत संरचना के लिए कृषि क्षेत्र का आर्थिक विकास सिंचाई, बिजली, बैंकिंग, व्यवस्था के साथ बाजार का भी व्यवस्था होनी चाहिए। कृषि विकास में भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, संस्थागत, संगठनात्मक, राजनैतिक कारक पूर्ण रूप से शामिल है। यह अपने स्तर में परिवार गांव, जिला राज्य देश और फिर विश्व का आर्थिक विकास होता है।

कृषि विकास को अधिक प्रभावित करता है—

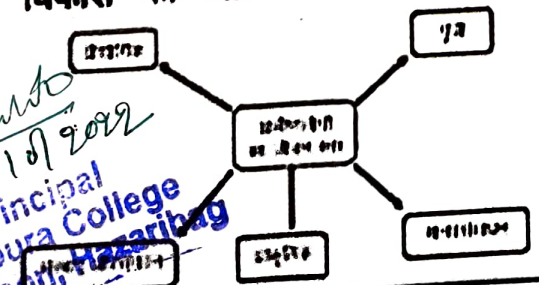

उपरोक्त रेखा चित्र से स्पष्ट होता है कि पूंजी प्रौद्योगिकी संस्थाएं और संगठन, प्राकृतिक मानव संसाधन से ही ग्रामीण लोगों का जीवन स्तर में सुधार हो सकता है। इसमें शीत भण्डारण विपणन, बिक्री केंद्र आदि सुविधाएं सुलभ करने के लिए सरकार को आगे आना होगा।

(b) कृषि विकास नीतियां— आर्थिक विकास में नीति कार्यक्रम और परियोजना के बीच अंतर महत्वपूर्ण है। नीति एक व्यापक शब्द है जो कोई भी कार्य को पूरा करता है परियोजना को बनाता है और उसी परियोजना के अनुसार पूरा कार्य करती है, इस प्रकार उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए परियोजना का होना आवश्यक है।

(c) कृषि विकास नीति का लक्ष्य— जब भी कृषि का विकास की नीति बनती है तो उस नीति में आर्थिक विकास ही सर्वोत्तम कार्य रहता है। इसमें कृषकों के जीवन स्तर का सुधार, रोजगार के अवसर पैदा करना संतुलित क्षेत्रीय विकास की स्थापना, आत्मनिर्भरता प्राप्त करना होता है। सरकार के द्वारा समय—समय पर कृषि विकास में अधिकांश आर्थिक विकास नीति का लक्ष्य रखा जाता है।

(d) आर्थिक वृद्धि के लिए कृषि का योगदान— झारखण्ड राज्य के हजारीबाग जिला के बड़कागांव प्रखण्ड के आर्थिक वृद्धि में सर्वाधिक योगदान की पहचान की है जिसे हम निम्नलिखित योगदान में जानते है —

१. कृषकों का योगदान।
२. उत्पादन का योगदान।
३. बाजार योगदान।
४. व्यापार की अच्छी व्यवस्था का योगदान।
५. मजदूरों का योगदान।
६. बैंकिंग व्यवस्था का योगदान।
७. ऋण की व्यवस्था का योगदान।

(e) कृषकों की आय बढ़ोतरी— इसके अंतर्गत, कृषकों की आय बढ़ोतरी में ही आर्थिक विकास होता है जैसे सुअर, पालन, मुर्गी पालन, मछली पालन, पशुपालन एवं डेयरी उद्योग, बागवानी फसलों की खेती, मशरूम की खेती, भेड़ बकरी पालन, कृषि

Principal
Karnpura College
Barkagaon, Hazaribag

18

महिला सशक्तिकरण और पंचायती राज व्यवस्था : एक सामाजिक अध्ययन (हजारीबाग जिले के बड़कागाँव प्रखण्ड के विशेष संदर्भ में)

पवन कुमार
सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
कर्णपुरा कॉलेज, बड़कागांव

परिचय

QUOD: सशक्तिकरण एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जागरूकता, कार्यशीलता, बेहतर नियंत्रण एवं व्यक्ति अपने विषय में निर्णय लेने के लिए समर्थ एवं स्वतंत्र होता है। सशक्तिकरण एक सर्वांगीण व बहुआयामी प्रक्रिया है, एक राष्ट्र का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब महिलाओं को समाज में उनका यथोचित स्थान व पद दिया जाए। उन्हें पुरुषों के साथ-साथ विकास की सहभागी माना जाए।

यह कटु सत्य है कि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक भारत में महिलाओं की स्थिति सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक दृष्टिकोण से सर्वाधिक रही है। भारतीय समाज में विद्यमान रूढ़िवादपूर्ण कुप्रथाएं जैसे बाल विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा, दहेज प्रथा, व पुत्र प्राथमिकता आदि ने समाज में महिलाओं को कमजोर व दुर्बल किया। ऐसी परिस्थिति में भारत में महिला सशक्तिकरण का सपना मात्र एक सपना था।

किंतु स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी ने यह एहसास दिलाया कि स्वतंत्र भारत के संविधान में ऐसे प्रावधानों को शामिल करना होगा जो कुप्रथा और रूढ़िगत परंपराओं को दूर करे एवं सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक रूप से महिलाओं को सशक्त करे, जिसका सबसे सफल उदाहरण है - पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं को एक तिहाई आरक्षण (७३वां संशोधन द्वारा)। भारतीय समाज में महिलाओं को पंचायतों में उनकी भागीदारी को सुनिश्चित करके, महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना गया।%%%

महिला सशक्तिकरण से संबंधित प्रेरणा गीत -

कोमल है कमजोर नहीं तू ।
शक्ति का नाम ही नारी है ।।
जग को जीवन देने वाली ।
मौत भी तुझसे हारी है ।।

अर्थ व परिभाषा :-

सशक्तिकरण का अभिप्राय सत्ता प्रतिष्ठानों में महिलाओं की साझेदारी व निर्णय लेने की क्षमता से है। महिला सशक्तिकरण महिलाओं का नया क्षितिज, नया संसार दिखाने का प्रयास है जिसमें वे नई क्षमताओं को प्राप्त कर स्वयं को नए तरीके से देख सकें तथा घरेलू सौहार्द संबंधों को बेहतर तरीके से समायोजित कर सकें साथ ही घरेलू एवं बाह्य परिवेश में स्वतंत्रता की अनुभूति कर सकें।

महिला सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष लाकर उनके प्रति होने वाले भेदभाव समाप्त करके उन्हें स्वरोजगार का अवसर उपलब्ध कराने के प्रयासों का पुनर्कलन किया जाए ताकि वे परंपरागत दब्बू प्रवृत्ति के आवरण से बाहर निकल कर आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बन सकें।

भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सामुदायिक प्रयास स्वतंत्रता के पश्चात ही किए गए ! भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का कहना था - लैंगिक असमानता चाहे वह आर्थिक सामाजिक राजनीतिक अथवा अन्य किसी भी क्षेत्र में हो मानवीय गरिमा की स्थापना के लिए उसे दूर करना अति आवश्यक है।

महात्मा गांधी ने महिलाओं के लिए कहा कि - स्वतंत्रता के पश्चात हमारा पहला प्रयास अधिक से अधिक महिलाओं को उनके वर्तमान स्थिति के प्रति जागरूक करना होगा।

महिला सशक्तिकरण के घटक :-

सशक्तिकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें सशक्तहीन वर्गों को शक्ति प्रदान करने के लिए जागरूक किया जाता है। उसमें सामाजिक - आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त करने की क्षमता का विकास होता है। पाल फेरे (१९७०) की मान्यता है कि सशक्तिकरण की प्रक्रिया में उत्पीड़ित वर्ग संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त करता है जबकि गोरिटेंज (१९९९) का मानना है कि इस प्रक्रिया में व्यक्ति तथा व्यक्तिगत स्तर पर शक्ति प्राप्त करता है। महिला सशक्तिकरण के कई घटक हैं जिनमें से मुख्य इस प्रकार है -

महिला सशक्तिकरण के घटक

माध्यम माध्यम माध्यम
परिणाम परिणाम परिणाम

चित्र : १.२ महिला सशक्तिकरण के घटक

महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम :

महिला सशक्तिकरण को समझने के लिए इसके विभिन्न आयामों को समझना आवश्यक है इस धारणा के मूल में स्त्री पुरुष को एक दूसरे

Kumar 17/11/2022
Principal
Karnpura College
Barkagaon, Hazaribag

छोटी मछली को निगल जाती है। ऐसी स्थिति में सूक्ष्म वित्तीय संस्थाओं के सामने कुछ समस्याएं इस प्रकार है:—

१. पूंजी की कमी
२. विश्वास की कमी
३. बड़े वित्तीय संस्थाओं से प्रतिस्पर्धा की स्थिति
४. सामाजिक वातावरण का अभाव
५. धोखा देने वाले संस्थाओं और संचालक की स्थिति
६. सामाजिक जागरूकता की समस्या
७. शिक्षा की कमी
८. साख की कमी

सुझाव:— आज के आर्थिक युग में बड़े वित्तीय संस्थाओं की जगह सूक्ष्म वित्तीय संस्थाओं को अगर सही दिशा में संचालित करने के लिए केन्द्र सरकार, राज्य सरकार या फिर रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा ठोस कदम उठाए जाए तो, देश के लिए भी और भारतीय नारियों के विकास के लिए भी मिल का पत्थर साबित हो सकता है।

संदर्भित ग्रंथ सूची

१. डा० एम अरूणा— द रोल ऑफ माइक्रो फाइनेंस इन वूमन इम्पॉवरमेन्ट। ए स्टडी ऑन द एस०एच०जी० बैंक लिन्केज प्रोग्राम इन हैदराबाद, इण्डियन जर्नल ऑफ कॉमर्श एण्ड मैनेजमेन्ट स्टडी भो० २३, इस्यू २१, पेज नं ६७—७२, २०१६

२. जॉन— ऐरे बैंक स्टॉक सेन्सेटिव टू रिस्क मैनेजमेंट जर्नल ऑफ रिस्क फाइनॉन्स भो० १०, इस्यू ०१, पेज नं ७—२२, २०१६

३. प्रियंका— माइक्रो फाइनॉन्स ए कमबाट अगेन्स पोवर्टी, द इण्डियन जर्नल ऑफ कॉमर्स भो० ६१, इस्यू ०४, पेज नं १६९—२०९, २०१४

४. पी० जॉन— मोबाइल बैंकिंग प्रोडक्ट एण्ड रूरल इण्डिया: एन इभोलूयेशन जर्नल ऑफ इकोनोमिक्स एण्ड फाइनॉन्स भो० ०१, इस्यू ०५, पेज नं ३६—४०, २०१३

५. राम लिंगन — प्रिंसपुल्स एण्ड प्रैक्टीश ऑफ बैंकिग इण्डियन इन्स्टीयूट ऑफ बैंकिंग एण्ड फाइनान्स न्यु दिल्ली पेज २६४—२६८, २०१२

६. कृष्णा कुमार — कस्टमर सटीसफैक्शन वर्सेज सर्विस क्वालिटी स्टडी बैंकिंग टेक्नोलाजी २०१० कॉन्फ्रेन्स एण्ड बैंकिग टेक्नोलाजी अवार्ड २००९ इण्डिया २०१०

20

निर्धनता रेखा से नीचे के परिवारों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन (हजारीबाग जिला के बड़कागांव पश्चिमी पंचायत के विशेष संदर्भ में)

कीर्तिनाथ महतो
प्रभारी प्राचार्य,
कर्णपुरा महाविद्यालय, बड़कागांव, हजारीबाग

परिचय

गरीबी:— जीवन की न्यूनतम आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होने के कारण दयनीय जीवन व्यतीत करना ही गरीबी कहलाता है। प्रोफेसर गिलन एड्ड गिलन के अनुसार निर्धनता वह मनोदशा है जिसमें एक व्यक्ति अपर्याप्त और अव्यवहारिक व्यय के मकान जैसी आवश्यकताओं पाता है।

80 / 175

साधारणत: गरीबी दो प्रकार की होती है:—

१. निरपेक्ष गरीबी
२. सापेक्ष गरीबी

१. निरपेक्ष गरीबी :— निरपेक्ष गरीबी वह गरीबी है जिससे मनुष्य अपने आवश्यकताओं को भी पूरा नही कर पाता है, यही वास्तविक गरीबी है। जैसे दो वक्त की रोटी भी नसीब ना होना और ना ही कपड़ा तथा मकान की व्यवस्था होना।

२. सापेक्ष गरीबी :— सापेक्ष गरीबी अमीरो के बीच एक तुलनात्मक विरोधाभाष गरीबी है जो सिर्फ एक देश या एक व्यक्ति से दूसरे की तुलना मे गरीब है। (जैसे भारत अमेरिका के तुलना में गरीब है)

विश्व बैंक मे गरीबी की स्थिति पर एक रिपोर्ट जारी की। १९८१ में १.९ अरब लोग भीषण गरीबी की स्थिति मे रहे रहे थे, अर्थात प्रतिदिन प्रति व्यक्ति

Kirtinath
12/10/2022